यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम् ।

यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्।।6।।

अन्वयः: यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम् यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम् (रघूणां अन्वयं वक्ष्ये)।

अनुवादः: विधिपूर्वक अग्नि में हवन करने वाले (यज्ञ करने वाले), याचकों की इच्छानुसार उन्हें (धनादि) देने वाले, अपराध के अनुसार (दुष्टों को) दण्ड देने वाले अथवा ठीक समय पर जागने वाले (प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में जागने वाले तथा समय आने पर सतत जागरुक रहने वाले)- रघुवंशी राजाओं का वर्णन करूंगा।

टिप्पणियां

यथाविधिः विधिमनतिक्रम्य (अव्ययीभाव)। यथाविधि हुताः अग्नयः यैः ते (बहुव्रीहि) तेषाम्। समास सूत्रः 'सुप्सुपा'। शास्त्रोक्त विधि के अनुसार जिन्होंने अग्नि में हवन किया है। शास्त्रों के अनुसार पवित्र अग्नियां दो प्रकार की है: **श्रौत,** जिन्हें वैतान या त्रेता भी कहते हैं, और **स्मार्त** जिन्हें गृह्य या आवसथ्य भी कहते हैं। इनमें श्रोत अग्नि के तीन रूप हैं: गार्हपत्य, आहवनीय तथा दक्षिण। परन्तु स्मार्त अग्नि एक ही है। मनु कहते हैं:**''पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्माताग्निर्दक्षिणः स्मृतः। गुरुराहवनीयस्तु साग्नि त्रेता गरीयसी।''** जब अग्नि का बहुवचन में प्रयोग होता है तब उससे तीन श्रोत अग्नियों का ग्रहण होता है। रघुवंशी राजा परम आस्तिक थे और वे श्रौत अग्नियों का विधिवत् पूजन और हवन करते थे।

यथाकामार्चितार्थिनाम्: काममनतिक्रम्य इति यथाकामम् यथाकामम् अर्चिताः अर्थिनः यैः ते (बहुव्रीहि), तेषाम्। रघुकुल के राजा याचकों को उनकी इच्छानुसार दान देते थे।

देखिये: **''यद्यस्यास्ति समीप्सितं वदतु तत् कस्याद्य किं दीयताम्।''** (स्वप्नवासवदत्तम्)।

यथापराधदण्डानां: अपराधमनतिक्रम्य इति यथापराधम्, यथापराधम् दण्डो येषां ते यथापराधदण्डा: (बहुव्रीहि), तेषाम्। अपराध के अनुसार अपराधी को दण्ड देने वाले। इसमें राजा के कर्तव्य का उल्लेख है कि उसे वेदों तथा धर्मशास्त्र में प्रतिपादित नियमों और कानूनों को प्रजा में पूरी तरह लागू करना चाहिये। शास्त्रोक्त विधि से प्रजा का पालन करते हुए उसे अपराधी को दण्ड देना चाहिये। शास्त्र राजा को दण्ड देने का अधिकार देता है तथा इसी कारण से उसे दण्डधर भी कहते हैं। परन्तु दण्ड के प्रयोग में राजा को सदा सतर्क रहना चाहिये। राजा की जागरुकता और सफलता इस बात में है कि उसके राज्य में कोई भी अपराधी दण्ड से बच न पाए, और अपराधी को अपने अपराध के अनुसार ही दण्ड मिले। रघुवंशी राजा सफल शासक थे क्योंकि उनके राज्य में अपराधी दण्ड से बच नहीं पाता था और उसे सदा अपराध के अनुसार दण्ड मिलता था।

यथाकालप्रबोधिनाम् कालमनतिक्रम्य इति यथाकालम्, यथाकालं प्रबोधिनाम् इति यथाकालप्रबोधिनाम्: यथा समय जागते थे। शास्त्रानुसार जागरण का समय ब्राह्ममुहूर्त है। देखिये:

''उत्थाय पश्चिमे यामे कृतशौच: समाहित:।

हुताग्निर्ब्राह्मणांश्चार्च्य प्रविशेत्स शुभां सभाम्।।''

तथा

''ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।

कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।।''

विशेषः प्रस्तुत श्लोक में प्रयुक्त चार विशेषण सूर्यवंशी राजाओं की चरित्र की चार विशेषताओं पर प्रकाश डालते हैं: वे अग्नि में आहूति डालकर देवताओं को संतुष्ट करते हैं (और वे देवभक्त थे) वे अतिथि पूजा कर मनुष्यों को प्रसन्न करते थे। वे न्याय कर प्रजा में आन्तरिक शान्ति स्थिर रखते थे और वे सदा ब्राह्ममूहुर्त में ही जागते थे।